जून, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 6

www.indiatibet.net

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

चीन ने तिब्बत के महत्वपूर्ण कागजात ऑनलाइन नीलामी घर को बेचे?

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

जून, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 6

तिब्बत पर 9वें विश्व सांसदों के सम्मेलन में स्पिकोंग

ताशी देकि

मिग्मार छमचो

नावांग छोर्डेन

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

coordinator@indiatibet.net

Contents

1.दीर्घायु प्रार्थना समारोह में शामिल हुए परम पावन दलाई लामा 2

2.तिब्बत पर विश्व सांसदों का नौवां सम्मेलन टोक्यो घोषणा-पत्र, टोक्यो कार्य योजना और परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के सम्मान में प्रस्ताव पारित करने के साथ संपन्न 4

3.तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन के लिए दुनिया भर के सांसद टोक्यो पहुंचे 6

4.तिब्बती क्षेत्रों में प्रवेश पर कांग्रेस को रिपोर्ट – २०१८ के तिब्बत प्रवेश पारस्परिक अधिनियम की धारा ४ (८ यू.एस.सी. ११८२ नोट) 7

5.'पिंजरे में बंद पक्षी के समान': चीन इसी तरह तिब्बतियों के स्वतंत्र आवागमन को प्रतिबंधित करता है 10

6.अमेरिका-चीन महिला फुटबॉल मैच में विरोध के बाद तिब्बतियों को निकाला गया, फिर वापस लिया गया 11

7.दलाई लामा के 90 वर्ष पूरे होने पर, उनका निर्वासित राष्ट्र सच का सामना कर रहा है 12

8.डेगे बांध का विरोध करने वाले तिब्बती बौद्ध मठ के दो महंथों को सजा 13

10.चीन ने तिब्बत के महत्वपूर्ण कागजात ऑनलाइन नीलामी घर को बेचे? 15

11.तिब्बती राजनीतिक कैदी को जानिए 16

अपनी बात

प्रयागराज महाकुंभ से तिब्बती संघर्ष को मिली नई ऊर्जा

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

परमपावन दलाई लामा के ''सी लर्निंग'' संबंधी विचार को इमोरी विश्वविद्यालय द्वारा विश्वस्तर पर प्रचारित–प्रसारित–प्रकाशित किया जाना स्वागतयोग्य है। यह"म्म स्मंतदपदह अर्थात्"वबपंस (सामाजिक), म्उवजपवदंस (भावनात्मक) एवं म्जीपबंस (नैतिक) स्मंतदपदह (अध्ययन) समाज के विविध क्षेत्रों के लिये उपयुक्त विद्यार्थियों का निर्माण करेगी। विश्व के 79 देशों में इसे अप.नाया गया है और भविष्य मे ऐसे देशों की संख्या और बढ़ेगी। सी लर्निंग का उद्देश्य है विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क को शिक्षित करना। इसके लिये उनके सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक अध्ययन पर विभिन्न खेलयुक्त मनोरंजक गतिविधियों द्वारा सुव्यवस्थित रूप से बल दिया जाता है।

हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा द्वारा हिमाचल प्रदेश की मनाली में संचालित हिमालय बौद्ध संस्कृति विद्यालय में श्रद्धेय गेशे लामा चोसफेल जोत्पा ने बताया कि सी लर्निंग विद्यार्थियों को भावी चुनौतियों का सामना करने में समर्थ बनाती है। इसी विद्यालय में गत 27–30 जून, 2025 तक इमोरी विश्वविद्यालय एवं पीरामल फाउंडेशन के सहयोग से हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गेशे लामा चोसफेल जोत्पा द्वारा सी लर्निंग कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसमें हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में अध्यापन कर रहे शिक्षकों को सी लर्निंग का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षित शिक्षक ही सी लर्निंग के अनुरूप अपने शिक्षण संस्थानों में अध्यापन करेंगे।

सी लर्निंग के बारे में इमोरी विश्वविद्यालय के कार्यकारी निदेशक डॉ0 लोबजंग तेंजिन नेगी तथा विषय विशेषज्ञ डॉ0 त्सुंडुस सैम्फेल ने स्पष्ट किया कि सी लर्निंग में विद्यार्थी के सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक अध्ययन पर बल दिया जाता है। वर्तमान समय में ऐसे बहुत विद्यार्थी हैं जिनमें सामाजिकता की कमी है। वे सामाजिक संबंधों की उपेक्षा करने लगे हैं। उनकी भावनात्मक शक्ति घट गई है। इस कमजोरी के कारण वे हत्या–आत्महत्या तक कर रहे हैं। उनमें नैतिकता की कमी है। इसके परिणामस्वरूप उनमें कृतज्ञता का बोध समाप्त हो गया है। विद्यार्थियों को बताना होगा कि समाज में सबकुछ परस्परनिर्भर है। एक कप चाय के बारे में विचार करें तो चाय की पत्ती, दूध, चीनी, पानी, बर्तन, आग आदि की प्राप्ति एवं उत्पादन में अनेक पीढ़ियों, फैक्ट्रियों, मजदूरों, बाजार–व्यवस्था, यातायात के साधन, वैज्ञानिक खोज, आर्थिक संसाधन आदि का योगदान है। हर वस्तु, सेवा, संस्कार, विचार एवं विकास के बारे में भी सोचेंगे तो हमारा हृदय कृतज्ञता से भर जायेगा। ऐसा भाव आते ही हम पानी, बिजली, अन्न आदि कभी बर्बाद नहीं करेंगे। हम इन्हें सिर्फ अपने खर्चे से प्राप्त समझने की भूल नहीं करेंगे। हम आम अपने पैसे से खरीद सकते हैं लेकिन पेड़ किसी और ने लगाये थे और दुकानदार भी कोई और है। इस प्रकार का भाव हमारे अंदर होना आवश्यक है।

सी लर्निंग में विद्यार्थियों से अधिक शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है। सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक रूप से कमजोर शिक्षक अपने संस्थान में विद्यार्थियों के गलत व्यवहार की उपेक्षा करते हैं। विद्यार्थियों के प्रति उनके मन में करुणा नहीं होती। अन्य कई शिक्षक विद्यार्थियों को बहुत अधिक प्रताड़ित–अपमानित करते हैं। उनके कारण अच्छे विद्यार्थी भी जीवन में निराश, हताश और कुंठित हो जाते हैं। उनकी स्वाभाविक प्रतिभा–योग्यता भी मर जाती है। अच्छे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के प्रति करुणायुक्त होते हैं। वे उनके आचार–. विचार–व्यवहार में अपने सहानभूतिपूर्ण आचार–विचार–व्यवहार के उदाहरण से रचनात्मक बदलाव लाते रहते हैं। समाज में ऐसे शिक्षक ही आदरणीय होते हैं और उनके ही विद्यार्थी प्रशंसनीय होते हैं। सी लर्निंग के प्रशिक्षण में ऐसे ही सामाजि.क–भावनात्मक–नैतिक शक्ति से भरपूर आदरणीय शिक्षक तैयार किये जाते हैं जो अपने समान या उससे भी बढ़कर प्रशंसनीय विद्यार्थी तैयार करेंगे।

सी लर्निंग कार्यशाला में पीरामल फाउंडेशन के कार्यक्रम निदेशक ईशान शर्मा (राजस्थान), तृप्ति मिश्र (बिहार), हिमाचल प्रदेश सी लर्निंग के कार्यक्रम प्रबंधक राजेन्द्र ठाकुर तथा आयोजक विद्यालय की प्राचार्य पलकी ठाकुर सहित सभी प्रतिभागियों का मत था कि सी लर्निंग हमें दलाई लामा की चार प्रमुख प्रतिबद्धताओं से जोड़ता है।

दलाई लामा की प्रथम प्रतिबद्धता है मानवीय मूल्यों को अप.नाना। शांति, अहिंसा, करुणा आदि सभी मानवीय मूल्य सभी के लिये आवश्यक हैं। दूसरी प्रतिबद्धता है सेकुलर होना। हम अपनी पसंद की पूजा–पद्धति के अनुकूल रहें साथ ही अन्य सभी पूजा–पद्धति (मजहब, पंथ, रिलिजन, संप्रदाय) का भी सम्मान करें। यही है सर्वपंथ समादर भाव अर्थात् सेकुलर होना। तीसरी प्रतिबद्धता है तिब्बत समस्या का शीघ्र समाधान। तिब्बत सिर्फ देश नहीं, एक दर्शन है। तिब्बत की पहचान है बौद्ध दर्शन की करुणा जिसे विस्तारवादी चीन सरकार मिटाकर तिब्बत का चीनीकरण कर रही है। चौथी प्रतिबद्धता है भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा को पुनर्जीवित करना। ज्ञान–विज्ञान के व्यापक क्षेत्र की समस्त विद्याओं को जनहित में फिर से प्रकट करना। ये प्राचीन विद्यायें सामाजिकता का विकास करती हैं। ये भा.वनात्मक तथा नैतिक मूल्यों को मजबूत करती है।

दलाई लामा की पहली प्रतिबद्धता की जड़ है उनका एक मनुष्य होना। दूसरी प्रतिबद्धता का कारण है उनका बौद्ध मतावलंबी होना। तीसरी प्रतिबद्धता का मूल है उनका तिब्बती होना। चौथी प्रतिबद्धता का आधार है उनका अपने को एवं समस्त तिब्बत को भारत का चेला मानना। वे भारत को गुरु तथा अपना दूसरा घर कहते हैं। ज्ञातव्य है कि बौद्ध दर्शन भारत से ही तिब्बत पहुँचा था। दलाई लामा का सी लर्निंग का विचार उनके व्यक्तित्व–कृतित्व के इन सभी पहलुओं से प्रभावित है। सी लर्निंग कार्यशालाओं में अधिकाधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित कर विद्यार्थियों को हर प्रकार के भटकाव से रोकने में मदद मिलेगी।

◆ 1.दीर्घायु प्रार्थना समारोह में शामिल हुए परम पावन दलाई लामा

०४ जून, २०२५

धर्मशाला। आज ०४ जून की सुबह धर्मशाला स्थित मुख्य तिब्बती मंदिर- सुगलागखांग में परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु के लिए प्रार्थना समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सुगलागखांग को गेंदे के फूलों की मालाओं से सजाया गया और मंदिर के प्रांगण में एक कतार से तिब्बती और बौद्ध झंडे लगाए गए। इस समारोह का आयोजन दार्जिलिंग के तिब्बती केंद्रीय विद्यालय (सीएसटी), न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी के तिब्बती समुदाय (टीसीएनवाईएनजे) और मिनेसोटा के तिब्बती अमेरिकी फाउंडेशन (टीएएफएम) के पूर्व छात्रों ने किया था।

भोंपुओं की आवाजों, ढोल की थापों और गायकों की मधुर कंठ लहरियों के बीच परम पावन गोल्फ़कार्ट में बैठकर प्रांगण के गलियारे से होते प्रसन्न मन आगे बढ़े। बीच में वे दोनों ओर कतारबद्ध खड़े शुभचिंतकों का अभिवादन कर रहे थे। मंदिर की बालकनी में वे लगभग ५५०० लोगों की भीड़ की ओर नजरें उठाईं और उनका अभिवादन करने के लिए थोड़ी देर के लिए वहां रुके।

मंदिर पहुंचकर परम पावन सिंहासन पर विराजमान हुए और उधर प्रार्थना शुरू हुई। प्रार्थना समारोह का नेतृत्व आदरणीय समदोंग रिनपोछे ने किया। उनके दाहिनी ओर केउत्सांग रिनपोछे और बाईं ओर चोखोर रिनपोछे बैठे थे। पहले बुद्ध की स्तुति का पाठ हुआ। इसके बाद दीर्घायु अनुष्ठान 'अमरता का सार' का पाठ हुआ, जिसे महान पांचवें दलाई लामा ने अमितायुस के रूप में गुरु पद्मसंभव के दर्शन के बाद रचा था।

प्रार्थना के दौरान जिन श्लोकों का पाठ किया गया वे बाधाओं को दूर करने और लामा को दीर्घायु प्रदान करने के लिए डाकिनियों का आह्वान करने वाले थे। इनमें सभी भव्य प्राणियों के लिए सभी लाभ और खुशी के स्रोत लामा से लंबे समय तक जीने का अनुरोध किया गया। इस बीच संरक्षकों के समूहों में से एक जुलूस प्रांगण से मंदिर के ऊपर, सिंहासन के पास से होते हुए वापस नीचे आया। सम्यक्त्व प्राप्त लोगों की मूर्तियां, शास्त्र ग्रंथ और अंत में एक बड़ा कालीन वहां लाया गया।

नागार्जुन की स्तुति में एक श्लोक के पाठ के बाद चाय परोसी गई, उसके बाद खीर का वितरण किया गया। इसके बाद जे. सोंगखापा की परंपरा को गौरवान्वित करने के लिए लामा से दीर्घायु होने का अनुरोध करते हुए एक श्लोक का पाठ हुआ। वास्तविक दीर्घायु प्रार्थना की शुरुआत में लामा को बुद्ध अमितायस के रूप में शून्यता से उठते हुए कल्पना की गई, जो सफेद रंग के थे, एक चेहरे और दो हाथों के साथ, जो अमरता का कलश पकड़े हुए थे। गुरु पद्मसंभव और डाकिनी येशे सोग्याल के आठ पहलुओं को संबोधित श्लोकों की शृंखला इन पंक्तियों के साथ समाप्त हुई :

...वह समय आ गया है,

कृपया जीवन की अमरता हेतु आध्यात्मिक सिद्धि प्रदान करें।

समदोंग रिनपोछे ने परम पावन को दीर्घायु बाण प्रदान किया, जिसे परम पावन ने लेकर कुछ देर तक हवा में लहराया। इसके बाद परम पावन को सोंग भेंट किया गया, जिसमें से उन्होंने प्रतीक रूप में एक छोटा सा हिस्सा लिया।

उपदेशों और तिब्बत के प्राणियों के रक्षक

आप ही शून्यता और करुणा से परिपूर्ण मार्ग का बहुत अच्छी तरह से प्रवचन करते हैं

उपदेशों के सागर तेनजिन ग्यात्सो, पद्मपाणि,

कमल हस्त

आपसे प्रार्थना है कि कि आपकी सभी इच्छाएं स्वत: पूरी हों।

इस श्लोक का तीन बार पाठ किए जाने के बाद, परम पावन को संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करने वाला एक मंडल भेंट किया गया। यह उनके लंबे नाम जम्पेल न्गाग्वांग लोबज़ैंग येशे तेंदज़िन ग्यात्सो से प्रदान किया गया, जिसमें उन्हें युगों-युगों तक जीवित रहने का अनुरोध किया गया। इसके बाद उन्हें बुद्ध के शरीर, वाणी और मन, दीर्घायु कलश, दीर्घायु अमृत और दीर्घायु गोलियाँ भेंट की गईं। सभी बीमारियों, नकारात्मक शक्तियों और बाधाओं को दूर करने के लिए शांति, वृद्धि, नियंत्रण और बल से संबंधित चार गतिविधियों को दर्शाने वाले अनुष्ठान केक चढ़ाए गए। शाही प्रतीकों, शुभ वस्तुओं और शुभ पदार्थों की भेंट चढ़ाई गई।

परम पावन की दीर्घायु के लिए उनके दो शिक्षकों द्वारा रचित प्रार्थना का पाठ करने के बाद जमयांग खेंत्से चोकी लोद्रो द्वारा लिखित प्रार्थना की गई।

ध्यान तीन तिब्बती महिलाओं की ओर गया, जिनमें से प्रमुख महिला ने परम पावन के लिए 'अमरता के अमृत की मधुर धुन' शीर्षक से एक प्रार्थना की।

आप विजेताओं के महान प्रेम और ज्ञान को मूर्त रूप देनेवाले हैं

आपका स्वरूप बिल्कुल बर्फ से ढके पहाड़ की तरह सफेद,

निर्माणकाय, सर्वोच्च आर्य लोकेश्वर,

तीनों लोकों के प्राणियों के गुरु जैसा है,

आप विजयी हों।

तीनों लोकों में आपके अद्भूत चमत्कार हैं

उदुंबर के फूल की तरह महान

हे सर्वज्ञ, इस दुनिया की शिक्षाओं और प्राणियों के मुकुट मणि,

महान विजेता पद्मपाणि, आपका जीवन दीर्घायु और सुरक्षित हो।

आप सनातन काल से ही बुद्ध थे

आपने अपने मन को जागृत किया और वज्र की तरह दृढ़ प्रतिज्ञा की

संघर्ष के इस युग में प्राणियों तक पहुंचने और उनके पालन पोषण के लिए।

हे दस भूमियों के महान भगवान, आपका जीवन दीर्घायु और सुरक्षित हो।

आप आत्मज्ञान के मार्ग में विभिन्न श्रेणियों की अनुभूतियों को प्रकट करें।

आपमें अभिन्न रूप से विलीन हैं तीनों रहस्य

आपमें ज्ञान और प्रेम के अकल्पनीय गुण हैं,

उत्तरी तिब्बत की भूमि पर शासन करने वाले ऋषियों के दूसरे भगवान

आपका जीवन दीर्घायु और सुरक्षित हो।

आपकी व्याख्या, बहस या रचना की क्षमता में कोई चीज बाधा नहीं डाल सकती।

अपने आत्मविश्वास के अष्टांगिक मार्ग के भण्डार के साथ

आप पूरी तरह से मुक्त हैं।

आप धर्म उपदेश ऐसे ज्ञान से देते हैं जो अचूक है और

व्यक्तिगत अहं को नष्ट करनेवाला है।

आप महान, सबके ऊपर हैं,

आपका जीवन दीर्घायु और सुरक्षित हो

हे शून्यता और करुणा के अवतार

परम पावन, आप तिब्बत के संरक्षक देवता हैं

जिन पर हमारी प्रार्थना के फूल गिरे हैं।

'आपके ९०वें जन्मदिन के अवसर पर हमने ड्रबटॉप थांगटोंग ग्यालपो द्वारा रचित यह गीत आपको समर्पित किया हैं।'

समूह के नेता ने निम्नलिखित पद्य की प्रत्येक पंक्ति गाई, जिसे उसके साथियों ने कोरस में दोहराया। अंत में समारोह मंडली के उत्साहपूर्ण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

तिब्बत के स्वर्गीय क्षेत्र में, बर्फ के पहाड़ों से घिरा हुआ,

सभी प्राणियों के लिए सभी खुशियों और सहायता का स्रोत

तेनज़िन ग्यात्सो है - व्यक्तिगत रूप से चेनरेज़िग -

उनका जीवन युगों-युगों तक सुरक्षित रहे!

इसके बाद धन्यवाद मंडल पेश किया गया और परम पावन ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा :

'आज, दार्जिलिंग में तिब्बती केंद्रीय विद्यालय के पूर्व छात्रों, न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी के तिब्बती समुदाय और मिनेसोटा के तिब्बती अमेरिकी फाउंडेशन ने मेरी लंबी उम्र के लिए ये प्रार्थनाएं की हैं।

'मेरा जन्म सीलिंग के पास हुआ था। वहां से मैं ल्हासा चला गया और जोवो प्रतिमा के सामने अपने मठ के महंथ योंगज़िन लिंग रिनपोछे से उपसंपदा की दीक्षा ली।

'मैंने आपसे पहले भी एक घटना का जिक्र किया होगा जब मुझे बुद्ध का सपना आया था। वह मेरे सामने मौजूद थे और मैं उनके आस-पास के लोगों के बीच था। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया तो मैं आदरपूर्वक उनके पास गया। उन्होंने अपने शिष्यों को आशीर्वाद देने के करुणा भाव से मेरे सिर को थपथपाया। मैंने प्रार्थना की, 'धर्म की जय हो' और दृढ़ निश्चय किया कि मैं धर्म की सेवा करूंगा।

'तिब्बत में हमने जिस परंपरा को संरक्षित किया हैं, वह बुद्ध के कुल उपदेशों का सार है। उन्होंने मेरे सिर पर थपथपाया और जो मैंने किया है, उसके लिए अपनी स्वीकृति व्यक्त की।

'मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था सिवाय एक चॉकलेट के, जो मैंने उन्हें अर्पित किया और वह इतने भर से खुश हो गए। मैं इस बात से हैरान था कि उन्होंने किस तरह से करुणा पूर्वक मेरा ख्याल रखा।

'जैसा कि आप जानते हैं, मैं तिब्बत से भागकर भारत आया हूं। यहां पर मैंने अपना अधिकांश जीवन व्यतीत किया है। मैं बोधगया और कई अन्य स्थानों पर गया हूं, जहां मैं प्रवचन दे सका हूं, जो बहुत अच्छा रहा है।

'लामा दोरजे चांग और लिंग रिनपोछे से प्राप्त प्रवचनों को व्यवहार में लाकर मैंनें अपने मन को बदला है। चीन में माओत्से तुंग मेरे प्रशंसक थे। उन्होंने आधुनिक विज्ञान में मेरी रुचि की प्रशंसा की, लेकिन यह भी कहा कि धर्म जहर है। इससे मैं कह सकता हूं कि उनका व्यवहार धर्म के प्रति शत्रुतापूर्ण था।

'मैं नेकई अन्य देशों की यात्रा की है और वहां प्रवचन देकर धर्म के उत्कर्ष में योगदान देने का भी काम किया है। नैतिकता, एकाग्रता और ज्ञान के तीन प्रशिक्षणों में मेरी भागीदारी के भीतर, मेरी मुख्य साधना बोधिचित्त के जागृत मन और शून्यता के दृष्टिकोण को विकसित करना रहा है।

''हालांकि हम बुद्ध शाक्यमुनि के ऐसे समय के अनुयायी हैं जब प्रवचन कम होते जा रहे हैं, हम उन्हें अपने भीतर पुनर्जीवित कर सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जो लोग बुद्ध के उपदेशों के विरोधी रहे हैं, वे भी अंततः उनमें रुचि लेंगे।

'हम वह मनुष्य हैं, जिन्होंने बुद्ध के उपदेशों को अर्जित किया है। मैं अपनी ओर से बौद्धधर्म की सेवा करने का भरसक प्रयास करता हूं। हर सुबह, जैसे ही मैं जागता हूं, मैं बोधिचित्त और शून्यता का दृष्टिकोण उत्पन्न करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मैं दूसरों की सेवा कर सकूँ। चूँकि हम कह सकते हैं कि आप मेरे छात्र हैं, इसलिए मैं आपको बताता हूं कि मैं कैसे साधना करता हूं, मैं कैसे बोधिचित्त और शून्यता पर ध्यान करता हूं। आपको भी यही विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। मुझे बस इतना ही कहना है - ताशी देलेक।'

समारोह का समापन बुद्ध के उपदेशों, 'सत्य के वचनों' और बोधिचित्त के उत्कर्ष के लिए श्लोंको की प्रार्थनाओं के साथ हुआ। परम पावन मुस्कुराते हुए मंदिर से लिफ्ट तक चलकर गए और रास्ते में भीड़ की ओर हाथ हिलाया। प्रांगण में वे अपने निवास पर वापस जाने के लिए एक बार फिर गोल्फ़कार्ट पर सवार हुए। वे प्रसन्न दिख रहे थे।

◆ 2.तिब्बत पर विश्व सांसदों का नौवां सम्मेलन टोक्यो घोषणा-पत्र, टोक्यो कार्य योजना और परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के सम्मान में प्रस्ताव पारित करने के साथ संपन्न

०५ जून, २०२५

टोक्यो (जापान), ०४ जून २०२५। तिब्बत पर विश्व सांसदों का नौवां सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) तीन प्रमुख दस्तावेजों को सर्वसम्मति से पारित करने के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। ये तीन दस्तावेज हैं- टोक्यो घोषणा-पत्र, टोक्यो कार्य योजना और परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन पर उनकी विरासत का जश्न।

सम्मेलन के दूसरे दिन तिब्बत मुद्दे पर दुनिया भर की एकजुटता बनाने, चीनी सरकार के प्रभाव का मुकाबला करने और समन्वित विधायी प्रयासों को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। आठवें सत्र में फेडरेशन फॉर ए डेमोक्रेटिक चाइना के उपाध्यक्ष वांग दाई सहित प्रमुख वक्ताओं ने भाग लिया। इनमें जापान-उग्यूर एसोसिएशन के अध्यक्ष अफुमेटो रेटेपु, दक्षिणी मंगोलिया कांग्रेस के उपाध्यक्ष ओलहोनुद दाइचिन, लेडी लिबर्टी हांगकांग की सह-संस्थापक एलरिक ली और ताइवान के जाने-माने मानवाधिकार कार्यकर्ता लिन ह्सिन यी शामिल थे। आठवें सत्र का विचारणीय विषय था, 'तिब्बत के लिए वैश्विक एकजुटता का निर्माण और चीनी प्रभाव का मुकाबला'। सत्र की अध्यक्षता तिब्बती सांसद तेनज़िन चोएज़िन ने की, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय गठबंधनों को मज़बूत करने पर ज़ोर दिया।

तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के नौवें सत्र का विषय 'तिब्बत पर व्यावहारिक समाधान: विश्व की संसदें क्या कर सकती हैं' था। इसकी अध्यक्षता बेल्जियम के सांसद एल्स. वान हूफ ने की। सत्र में ऑस्ट्रिया से यूरोपीय संसद के सदस्य और यूरोपियन पार्लियामेंटरी फ्रेंडशिप ग्रुप फॉर तिब्बत के उपाध्यक्ष हेनेस हीडे, जापान के प्रतिनिधि सभा के सदस्य वतनबे शू, और चिली के चैंबर ऑफ डेप्युटीज के सदस्य डिप्टी व्लादो मिरोसेविक वर्दुगो सहित कई वक्ताओं ने भाग लिया। इन वक्ताओं ने तिब्बती मुद्दे के शांतिपूर्ण और व्यावहारिक समाधान का समर्थन करने के लिए दुनिया भर की संसदों के लिए कार्रवाई योग्य रणनीतियों पर चर्चा की।

दसवें सत्र का विषय था, 'तिब्बत समाधान अधिनियम और आगे का रास्ता (रिजॉल्व तिब्बत ऐक्ट एंड द पाथ फॉरवर्ड)'। इसकी अध्यक्षता पूर्व संसद सदस्य (न्यूजीलैंड) और चीन पर अंतर-संसदीय गठबंधन (आईपीएसी) के पूर्व सह-अध्यक्ष साइमन ओ'कॉनर ने की। इस सत्र के वक्ताओं में कनाडा के पूर्व न्याय मंत्री और अटॉर्नी जनरल आरिफ विरानी, भारतीय सांसद और तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) के पूर्व संयोजक सुजीत कुमार और सुरक्षा समिति के अध्यक्ष और चैंबर ऑफ डेप्युटीज (चेक गणराज्य) के सदस्य पावेल ज़ाचेक शामिल थे। इस सत्र के बाद कार्य समूह चर्चा में गहन विचार-विमर्श हुआ।

इस दिन कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय नेताओं के वीडियो संदेश भी प्रसारित किए गए। इनमें स्लोवाकिया के पूर्व राष्ट्रपति आंद्रेज किस्का, सांसद व्लादिमीर लेडेकी और सांसद टॉमस वलासेक; स्विट्जरलैंड के सांसद निकोलस वाल्डर और सांसद बाल्थासार ग्लैटली; ताइवान की संसद युआन के दोनों सदस्य फैन यूं और चियू चिह-वेई; स्कॉटिश संसद के सदस्य रॉस ग्रीर; मैक्सिको के पूर्व डिप्टी साल्वाडोर कारो कैबरेरा; हंगरी के सांसद फेरेंस गेलेन्सर और ऑस्ट्रेलिया के सीनेटर डीन स्मिथ के वीडियो संदेश शामिल थे।

सम्मेलन का समापन तीन प्रमुख प्रस्तावों को औपचारिक रूप से पारित करने के साथ हुआ। प्रस्तावों को जिस मसौदा समिति ने तैयार और पेश किया था, उसके अध्यक्ष थे- पूर्वी एशियाई अध्ययन केंद्र में चीनी अध्ययन के प्रोफेसर और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के पूर्व डीन प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली (पीएचडी)। समिति के सदस्यों में सांसद क्रिस लॉ (ब्रिटेन), डॉ. काटालिन सेह (हंगरी), व्लादो मिरोसेविक वर्दुगो (चिली), सुजीत कुमार (भारत), शेरिंग यांगचेन (निर्वासित तिब्बती संसद), डीआईआईआर सचिव कर्मा चोयिंग और प्रतिनिधि डॉ. आर्य सावांग ग्यालपो शामिल थे।

समापन समारोह में जापानी सांसद और जैपनिज पार्लियामेंटरी सपार्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के महसचिव यामादा हिरोशी और निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया गया। आयोजकों और मसौदा समिति के अध्यक्ष द्वारा समापन प्रेस ब्रीफिंग के साथ सम्मेलन के आधिकारिक समापन की घोषणा की गई।

निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा आयोजित डब्ल्यूपीसीटी तिब्बती मुद्दे के लिए अंतरराष्ट्रीय संसदीय समर्थन को मजबूत करने और समन्वय करने के अपने मिशन पर अनवरत काम कर रहा है। १९९४ में नई दिल्ली में आयोजित पहले सम्मेलन के बाद से डब्ल्यूपीसीटी के सम्मेलन विल्नियस (१९९५), वाशिंगटन डी.सी. (१९९७), एडिनबर्ग (२००५), रोम (२००९), ओटावा (२०१२), रीगा (२०१९) और वाशिंगटन डी.सी. (२०२२) में आयोजित किए गए हैं।

डब्ल्यूपीसीटी के प्राथमिक उद्देश्य तिब्बती पहचान और संस्कृति के अस्तित्व के लिए दुनिया भर की संसदों में अपनी बात को रखकर उन्हें पक्ष में करना और उन्हें भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना, तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन और धार्मिक दमन के बारे में चिंताओं को उठाना और परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों के बीच नए सिरे से संवाद को बढ़ावा देना है।

-तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ 3.तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन के लिए दुनिया भर के सांसद टोक्यो पहुंचे

०३ जून, २०२५

टोक्यो (जापान), ०३ जून २०२५। तिब्बत पर विश्व सांसदों का सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) आज ०३ जून को जापानी संसद के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हॉल में शुरू हुआ, जिसमें २९ देशों के १४२ प्रतिभागी शामिल हुए। यह सम्मेलन निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा जैपनिज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत के सहयोग से आयोजित किया गया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि जापानी हाउस ऑफ काउंसिलर्स के पूर्व स्पीकर और वर्तमान सदस्य अकीको सैंटो, विशेष अतिथि जापान की पूर्व प्रथम महिला मैडम अकी अबे और हिगाशी होंगवानजी मंदिर के २५वें मुख्य महंथ भिक्षु चोजुन ओहतानी ने अपने संबोधन दिए। सत्र में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी और कांग्रेसमैन माइकल मैककॉल के वीडियो संदेश, निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और जैपनिज पार्लियामेंटरी सपोर्ट ग्रुप फॉर तिब्बत की अध्यक्ष एरिको यामातानी के संबोधन भी शामिल थे। विशेष आकर्षण परम पावन दलाई लामा का संदेश था, जिसके बाद वृत्तचित्र डेमोक्रेसी : द गिफ्ट ऑफ हिज होलीनेस १४र्थ दलाई लामा टु तिब्बत' दिखाया गया।

मुख्य अतिथि अकीको सैंटो ने चीन-तिब्बत संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने में परम पावन दलाई लामा के अथक प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक आजस्वी भाषण दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि उनके इन प्रयासों के बावजूद चीनी कम्युनिस्ट सरकार तिब्बती संस्कृति और भाषा को दबाना जारी रखे हुए है, जिससे उनके समूल संहार का खतरा उत्पन्न हो गया है। एकता और एकजुटता के महत्व पर जोर देते उन्होंने तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने तथा तिब्बत-चीन संघर्ष के समाधान में योगदान देने में पश्चिमी देशों के सांसदों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

विशेष अतिथि अकी अबे ने भावपूर्ण टिप्पणियां व्यक्त कीं। उन्होंने बताया कि कैसे उनके पति के निधन के बाद परम पावन दलाई लामा ने बुद्ध की एक प्रतिमा के साथ शोक संदेश भेजा था। वह प्रतिमा को अपने दिवंगत पति की तस्वीर के सामने रखती हैं और नियमित रूप से प्रार्थना करती हैं। परम पावन की जापान यात्रा और उनकी मुलाकात के बारे में स्मरण करते हुए उन्होंने उस समय चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा डाले गए दबाव का उल्लेख किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनके दिवंगत पति मानवाधिकारों के कट्टर समर्थक थे और तिब्बत की स्थिति को लेकर बेहद चिंतित थे। उन्होंने तिब्बती मुद्दे के लिए अपने निरंतर और मजबूत समर्थन का वचन दिया।

भिक्षु चोजुन ओहतानी ने भी सभा को संबोधित किया। उन्होंने ०९ नवंबर, २०१६ को होंगवानजी मंदिर की अपनी यात्रा के दौरान परम पावन दलाई लामा के साथ अपनी मुलाकात के बारे में बात की। अपने भाषण में भिक्षु ओहतानी ने इस बात पर जोर दिया कि खुशी की तलाश मानव जीवन की एक मौलिक आकांक्षा है और इसे प्राप्त करने के लिए अपने दिल में करुणा और प्रेम-दया की भावना विकसित करना आवश्यक है।

इस अवसर पर स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग, डीआईआईआर कलोन नोरज़िन डोल्मा, निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य और डीआईआईआर के सचिव और अतिरिक्त सचिव समेत केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के अधिकारी और परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

जापानी सांसद उरानो यासुतो की अध्यक्षता में आयोजित दूसरे सत्र में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का मुख्य भाषण, इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत के

अध्यक्ष रिचर्ड गेरे का वीडियो संदेश और पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी नामकी की ओजपूर्ण गवाही शामिल थी। इसके बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की गलत सूचनाओं का मुकाबला करने और चीनी अधिनायकवाद की चुनौतियों का समाधान करने को लेकर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता नेशनल चुंग ह्सिंग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के उपाध्यक्ष डॉ. मुमिन चेन ने की।

वक्ताओं में पूर्व भारतीय राजनयिक और 'इंपीरियल गेम्स इन तिब्बत' के लेखक श्री दिलीप सिन्हा और जापान के वासेदा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इशिहामा युमिको शामिल थे।

तीसरे सत्र का विषय था- पीआरसी का अधिनायकवादी शासन: लोकतांत्रिक संस्थाओं और मानवाधिकारों के लिए चुनौतियां। इस सत्र की अध्यक्षता जापान इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल फंडामेंटल्स के अध्यक्ष योशिको सकुराई ने की। वक्ताओं में अल्पसंख्यक मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र के पूर्व विशेष दूत फर्नांड डी वेरेन्स; ह्यूमन राइट्स वॉच जापान के टेपेई कसाई और अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग के अध्यक्ष स्टीफन श्नेक (वीडियो के माध्यम से) शामिल थे।

'राजनयिक समाधानों को तरजीह : अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दमन को खत्म करने के लिए बहुपक्षीय दृष्टिकोण' विषयक सत्र की अध्यक्षता डीआईआईआर कलोन नोरजिन डोल्मा ने की। इसमें तिब्बती सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स एंड डेमोक्रेसी के कार्यकारी निदेशक तेनज़िन दावा और एमनेस्टी इंटरनेशनल जापान में चीन मामलों के समन्वयक किताई डेसुके के भावपूर्ण विचार शामिल थे। सत्र के दौरान लिथुआनिया के सांसद डेनियस ज़ालिमास, अर्जेंटीना के डिप्टी एस्टेबन पॉलोन, जर्मनी के सांसद माइकल ब्रांड और इतालवी सीनेटर एंड्रिया डी प्रियमो, मालवसी इलेनिया और गिउलिओ टेरज़ी डी सैंट अगाटा के वीडियो संदेश सुनाए गए।

छठे सत्र में तिब्बत के पर्यावरणीय महत्व और तिब्बती पठार के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र पर चीन की नीतियों के प्रभाव पर चर्चा हुई। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के चीनी अध्ययन के विशेषज्ञ प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली की अध्यक्षता में आयोजित इस सत्र में तिब्बत नीति संस्थान के उप निदेशक टेम्पा ग्यालत्सेन ज़मल्हा और नई दिल्ली के नीति अनुसंधान केंद्र के प्रोफेसर एमेरिटस प्रोफेसर ब्रह्म चेलानी ने प्रस्तुतियां दीं।

गहन चर्चा और प्रस्तुति के लिए कार्य समूहों के गठन के साथ सम्मेलन के पहले दिन का समापन हुआ। निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा आयोजित इस डब्ल्यूपीसीटी के सम्मेलन का पहला आयोजन नई दिल्ली (१९९४) में हुआ था, जिसमें कब्जे के बाद तिब्बती पहचान को संरक्षित करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी गई थी। इसके बाद के सम्मेलन विल्नियस (१९९५), वाशिंगटन डी.सी. (१९९७), एडिनबर्ग (२००५), रोम (२००९), ओटावा (२०१२), रीगा (२०१९) और फिर वाशिंगटन डी.सी. (२०२२) में आयोजित किए गए। सम्मेलन का उद्देश्य सांसदों को तिब्बती पहचान और संस्कृति के अस्तित्व की वकालत करने, तिब्बत में मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और परम पावन दलाई लामा और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के जरिए समाधान निकालने के लिए नए सिरे से बातचीत करने का आग्रह करने में अग्रणी अंतरराष्ट्रीय भूमिका निभाने के लिए विश्व की संसदों को प्रोत्साहित करना है।

-तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ 4.तिब्बती क्षेत्रों में प्रवेश पर कांग्रेस को रिपोर्ट – २०१८ के तिब्बत प्रवेश पारस्परिक अधिनियम की धारा ४ (८ यू.एस.सी. ११८२ नोट)

३१ मई, २०२५

– अमेरिकी विदेश मंत्रालय

रिपोर्ट: पूर्वी एशिया-प्रशांत ब्यूरो, २९ मई २०२५

कार्यकारी सारांश

२०१८ के रिसिप्रोकल एक्सेस टु तिब्बत ऐक्ट (तिब्बत प्रवेश पारस्परिक अधिनियम) की धारा ४ (८ यू.एस.सी. ११८२ नोट) के अनुसार, अमेरिकी विदेश मंत्रालय कांग्रेस को एक वार्षिक रिपोर्ट भेजता है। इसमें चीनी अधिकारियों द्वारा अमेरिकी राजनयिकों, अधिकारियों, पत्रकारों और पर्यटकों को चीन अधिकृत तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) और अन्य तिब्बती क्षेत्रों में प्रवेश की अनुमति के बारे में बताया जाता है। यह रिपोर्टिंग अवधि वर्ष २०२४ के बारे में है और इसकी तुलना २०२३ से की गई है। रिपोर्ट में पिछले रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान चीन के तिब्बती क्षेत्रों और अन्य क्षेत्रों के बीच के साथ ही एक प्रांत के अंदर ही तिब्बती और गैर-तिब्बती क्षेत्रों के बीव प्रवेश की दी गई अनुमति में अंतर के अलावा तिब्बती क्षेत्रों में यात्रा में बाधा डालने वाले आवश्यक परमिट प्रणाली और अन्य उपायों का विवरण शामिल किया जाता है।

रिपोर्ट में खुलकर आया है कि ऐतिहासिक रूप से अमेरिकी राजनयिकों और अधिकारियों, पत्रकारों और पर्यटकों के लिए टीएआर और टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों में यात्रा में बाधा डालने वाली चीनी सरकार के नियम और उसकी प्रक्रियाएं २०२४ में भी लागू रहीं। टीएआर में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को यात्रा के लिए टीएआर सरकार से यात्रा परमिट की मंजूरी लेनी पड़ रही है। २०१९ के बाद से कोई भी अमेरिकी अधिकारी टीएआर का दौरा नहीं कर पाया है। २०२४ में, अमेरिकी अधिकारियों ने टीएआर की आधिकारिक यात्रा के लिए पांच अनुरोध किए, जिनमें से किसी को भी मंजूरी नहीं मिली। २०२३ में तिब्बत जाने के लिए तीन अनुरोध किए गए, जिन्हें भी मंजूरी नहीं मिली। पहले राजनयिकों और अधिकारियों को टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा करने के लिए परमिट या पूर्व सूचना की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। हालांकि, चीन के सुरक्षा बलों ने ऐसे क्षेत्रों में आधिकारिक या व्यक्तिगत यात्रा के दौरान भी अमेरिकी राजनयिकों, अधिकारियों और विदेशियों की गतिविधियों को डराने, निगरानी करने, परेशान करने और प्रतिबंधित करने के लिए विशिष्ट निगरानी का इस्तेमाल किया। तिब्बती अमेरिकियों को तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा पर प्रतिबंधों का लगातार सामना करना पड़ रहा है। पत्रकारों के लिए इन क्षेत्रों तक पहुंच प्रतिबंधित और सीमित रही।

चेंगदू में अमेरिकी महावाणिज्य दूतावास में परिचालन के निलंबन का प्रभाव

ह्यूस्टन स्थित चीन के महावाणिज्य दूतावास के संचालन की अनुमति अमेरिका द्वारा वापस लेने के जवाब में चीनी सरकार ने चेंगदू (सीजी चेंगदू) में अमेरिकी महावाणिज्य दूतावास के संचालन की सहमति वापस ले ली। इस कारण अमेरिका ने २७ जुलाई, २०२० को चेंगदू महावाणिज्य दूतावास का संचालन निलंबित कर दिया। टीएआर विभाग अब बीजिंग दूतावास के कांसुलर जिले से संचालित हो रहा है। यह स्थान सीजी चेंगदू से हजारों मील दूर हो गया है। सीजी चेंगदू में महावाणिज्य दूतावास का संचालन रोके जाने से तिब्बती क्षेत्रों तक संपर्क बनाए रखने की अमेरिकी मिशन की समग्र क्षमता गंभीर रूप से बाधित हुई है।

तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र और तिब्बती क्षेत्रों तक पहुंच में अंतर

एक ओर जहां चीन ने टीएआर की यात्रा के लिए सख्त नियम को लागू रखा, वहीं अन्य प्रांतों के संवेदनशील तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा के लिए नियम अब भी अस्पष्ट हैं। टीएआर के बाहर युन्नान, सिचुआन, गांसु और किंगहाई प्रांतों में शामिल किए गए ऐतिहासिक तिब्बती क्षेत्र और वर्तमान तिब्बती आबादी वाले क्षेत्र प्रिफेक्चर और काउंटी में विभाजित कर दिए हैं। नगरपालिका स्तर और प्रिफेक्चर स्तर के चीनी अधिकारी और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) के पदाधिकारी अक्सर इन क्षेत्रों में आवागमन पर भेदभावकारी प्रतिबंध थोपते रहते हैं। इसके कारण भेदभावकारी स्थितियां उत्पन्न होती हैं और इन प्रतिबंधों के औचित्य और समय के बारे में जानकारी रखना करना मुश्किल हो जाता है।

चीन के तिब्बती और गैर-तिब्बती क्षेत्रों में आवागमन की दी गई अनुमति की तुलना

राजनयिक और अन्य अधिकारी

टीएआर २०२४ में चीन का एकमात्र ऐसा क्षेत्र बना रहा, जहां राजनयिकों और अन्य विदेशी अधिकारियों को औपचारिक रूप से जाने के लिए वहां की सरकार से अनुमति लेने की जरूरत होती थी। राजनयिक आधिकारिक स्वीकृति के बिना टीएआर में प्रवेश करने के लिए हवाई या ट्रेन टिकट नहीं खरीद सकते थे।

राजनयिकों और अन्य विदेशी अधिकारियों को टीएआर के बाहर के तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा पर औपचारिक प्रतिबंधों का सामना नहीं करना पड़ता है। हालाकि चीनी अधिकारियों ने कभी-कभी इन क्षेत्रों में यात्रियों को डराने, निगरानी करने और परेशान करने के लिए विशिष्ट निगरानी का इस्तेमाल किया है।

वर्ष २०२४ के दौरान अमेरिकी मिशन के कर्मचारी टीएआर में किसी भी अमेरिकी नागरिक सेवा के लिए दौरा कराने असमर्थ थे, क्योंकि कांसुलर अधिकारियों द्वारा यात्राओं के अनुरोधों को मंजूरी नहीं दी जाती थी। २०१९ के बाद से किसी भी कांसुलर अधिकारी ने टीएआर का दौरा नहीं किया है। पिछले वर्षों में टीएआर के स्थानीय अधिकारी काउंसलर से आए अनुरोधों के आधार पर ही अमेरिकी नागरिकों को सहायता प्रदान कर पाते थे। हालांकि कभी-कभी आपातकालीन आगमन के अनुरोधों पर जवाब देने में देरी भी करते थे।

पर्यटक

बीजिंग द्वारा लागू नियमों के कारण टीएआर क्षेत्र में पर्यटन के लिए आए अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों की यात्रा को नियंत्रित हुआ है। इस तरह का प्रतिबंध चीन में किसी अन्य प्रांतों द्वारा लागू नहीं किया गया है। १९८९ के केंद्रीय सरकार के नियमन के अनुसार, अमेरिकी नागरिकों सहित अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों को टीएआर सरकार द्वारा जारी एक आधिकारिक पुष्टि-पत्र प्राप्त करना आवश्यक था, जो टीएआर क्षेत्र में प्रवेश करने से पहले बीजिंग में केंद्र सरकार को सूचना देता है। अधिकांश पर्यटकों को चीनी सरकार के साथ आधिकारिक रूप से पंजीकृत ट्रैवल एजेंसियों के माध्यम से यात्राएं करने पर ऐसे पत्र प्राप्त हुए। चीन ने टीएआर में रहने के दौरान अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के साथ सरकार द्वारा नामित एक टूर गाइड का रहना अनिवार्य कर दिया। विदेशियों को सड़क मार्ग से टीएआर में प्रवेश करने की अनुमति शायद ही कभी मिली हो। विदेशी प्रभावशाली लोगों और यात्रा ब्लॉगर्स को दी गई विशेष छूट की भी रिपोर्टें हैं, जिनमें से कुछ को चीनी सरकारी मीडिया ने आगे बढ़ाया है। अधिकारियों ने कई अवसरों पर अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को टीएआर में प्रवेश से रोक दिया, जिन्हें सरकार राजनीतिक रूप से संवेदनशील मानती थी। इसमें चीन के १९५९ में तिब्बत पर आक्रमण के खिलाफ तिब्बती विद्रोह की १० मार्च की सालगिरह का दिन और जुलाई में दलाई लामा का जन्मदिन के अवसर शामिल हैं। टीएआर पर्यटन ब्यूरो ने बताया कि २०२३ में टीएआर में साढ़े पांच करोड़ से अधिक घरेलू और विदेशी पर्यटक आए। २०१९ में सीजी चेंगदू ने अनुमान लगाया गया कि लगभग १०,००० अमेरिकी नागरिकों ने इस क्षेत्र का दौरा किया। यह ज्ञात नहीं है कि २०२४ में कितने अमेरिकी नागरिकों ने टीएआर का दौरा किया, लेकिन कुल मिलाकर अमेरिकी संख्या २०१९ की संख्या से कम रहने का अनुमान है।

तिब्बती मूल के अमेरिकी नागरिकों को टीएआर का दौरा करने के लिए चीनी वीजा या यात्रा परमिट के लिए आवेदन करते समय अन्य अमेरिकी नागरिकों की तुलना में सख्त जांच प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। उनके आवेदनों को यूनाइटेड फ्रंट वर्क डिपार्टमेंट (यूएफडब्ल्यूडी) द्वारा जांच-पड़ताल की जाती है। उन्हें अक्सर तिब्बती क्षेत्र में किसी रिश्तेदार या मेजबान से प्राप्त एक पत्र दिखाना होता है, चीनी दूतावास में तिब्बती मामलों के प्रभारी या वाणिज्य दूतावास अधिकारी के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार देना होता है और प्राकृतिककरण प्रमाण-पत्र लेना होता है, जन्म प्रमाण-पत्र, स्कूल और कार्य रिकॉर्ड, शपथ-पत्र और अन्य दस्तावेजों की प्रतियां आदि जमा करना होता है। तिब्बती अमेरिकियों ने चीन के अन्य क्षेत्रों की तुलना में तिब्बती क्षेत्रों में सुरक्षा अधिकारियों द्वारा लगातार उत्पीड़न की अधिक सूचना दी, जिसमें स्थानीय यूएफडब्ल्यूडी कार्यालय में रिपोर्ट करने की आवश्यकताएं शामिल हैं जहां कुछ लोगों से कथित तौर पर पूछताछ की गई, धमकी दी गई और उन्हें अपने मोबाइल

फोन पर ट्रैकिंग सॉफ्टवेयर डाउनलोड करने के लिए मजबूर किया गया। तिब्बती अमेरिकी समुदाय के कुछ सदस्यों ने बताया इन बाधाओं के बावजूद, तिब्बती मूल के अमेरिकी या यूरोपीय पासपोर्ट रखने वाले लोगों ने भी पिछले वर्षों की तुलना में टीएआर तक अधिक आवागमन किया। यह जानकारी वास्तविक है, तिब्बती अमेरिकियों को जारी किए गए वीज़ा की संख्या पर कोई ठोस आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

पत्रकार

बीजिंग ने अमेरिकी पत्रकारों को टीएआर क्षेत्र में आवागमन पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा है। चीनी नियमों के तहत अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों को टीएआर क्षेत्रों के अलावा चीन के किसी भी हिस्से में यात्रा करने के लिए पूर्व अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती है। चीन में स्थित अंतरराष्ट्रीय प्रेस कोर के पेशेवर संगठन- फॉरेन कॉरेस्पोंडेंट क्लब ऑफ चाइना (एफसीसीसी) के अनुसार, सरकार ने अमेरिकी पत्रकारों द्वारा टीएआर क्षेत्र का दौरा करने और वहां से रिपोर्ट भेजने के अधिकांश अनुरोधों को अस्वीकार कर दिया है। जब कभी चीनी सरकार ने वहां जाने की अनुमति दी भी है तो सुरक्षा अधिकारियों ने हर समय इन पत्रकारों की गतिविधियों की निगरानी की और इनकी गतिविधियों को नियंत्रण में रखा है। एफसीसीसी की २०२३ की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, केवल एक विदेशी पत्रकार को टीएआर की यात्रा करने की अनुमति दी गई थी। चीनी सरकार व्यक्तिगत अनुमति नहीं देती बल्कि चीनी अधिकारियों द्वारा चुने गए पंजीकृत पत्रकारों को ही क्षेत्र के संगठित सामूहिक दौरों की अनुमति देती है।

अगर कभी अमेरिकी पत्रकारों को तिब्बती क्षेत्रों में जाने की अनुमति दी भी गई तो चीनी सरकार ने वहां के तिब्बतियों को डरा-धमकाकर उनसे बातचीत करने से रोका। और इस तरह अमेरिकी पत्रकारों को तिब्बत के बारे में रिपोर्ट करने के सारे स्रोतों को ही दबा दिया।

इसी तरह से सामूहिक पर्यटन कराने की नीति को सरकार ने क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि और अधिक आवागमन वाला बताया है। हालांकि जानकारी देने पर पर सख्त नियंत्रण बनाए रखा है।

तिब्बती और गैर-तिब्बती क्षेत्रों के बीच आवागमन के स्तर की तुलना

राजनयिक और अन्य अधिकारी

पहले अमेरिकी राजनयिकों और अन्य अधिकारियों को टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा करने के लिए आवेदन नहीं करना पड़ता था। हालांकि कभी-कभी कुछ विशेष क्षेत्रों तक आवागमन अवरुद्ध हो जाती थी और स्थानीय सरकार, धार्मिक और सामुदायिक नेताओं के साथ बैठकों के लिए स्थानीय विदेश मामलों के कार्यालय (एफएओ) की अनुमति लेनी होती थी। यह नियम पूरे चीन में कई इलाकों के लिए आम था। चीनी सुरक्षा कर्मियों ने टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा करने वालों को डराने के लिए विशिष्ट निगरानी का इस्तेमाल किया है। सरकार द्वारा नामित निगरानीकर्ताओं ने राजनयिकों और अधिकारियों का पीछा किया, उन्हें स्थानीय संपर्कों से मिलने या बात करने से रोका, उनसे पूछताछ की और उनकी आवाजाही को प्रतिबंधित किया है। सिचुआन प्रांत में कर्दज़े (चीनी: गंजी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर (टीएपी) और न्गाबा (चीनी: आबा) टीएपी के तिब्बती क्षेत्रों में मठों तक उनकी आवाजाही को सीमित कर दिया गया। हाल के वर्षों में युन्नान, सिचुआन, गांसू और किंगहाई प्रांतों के तिब्बती क्षेत्रों में दौरे के दौरान स्थानीय अधिकारियों ने अमेरिकी राजनयिकों पर निगरानी रखी है और कई मामलों में उन्हें कुछ मठों में प्रवेश करने से रोक दिया, कुछ विशेष सड़कों को अवरुद्ध कर दिया, उन्हें स्थानीय वार्ताकारों के साथ बैठक या बातचीत करने से रोका तथा उनकी बातचीत पर नजर रखी।

पर्यटक

अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को कभी-कभी टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों की यात्रा करने पर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। कुछ विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में भी अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की आवाजाही को प्रतिबंधित किया जाता है। इनमें प्रमुख मठों वाले क्षेत्र या विरोध गतिविधियों के इतिहास वाले क्षेत्र शामिल हैं, जैसे कि न्गाबा (जहां २००८ के विद्रोह के बाद कई आत्मदाह हुए)।

पत्रकार

पत्रकारों को टीएआर के बाहर के क्षेत्रों में, जहां तिब्बती आबादी ठीकठाक संख्या में है, यात्रा करने की अनुमति दी जाती है। हालांकि उनकी बहुत कठोर निगरानी की जाती है। कुछ क्षेत्रों से उन्हें सीधे तौर पर जाने से रोका जाता है और सरकार द्वारा धमकाया गया है। एफसीसीसी की २०२३ की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, विदेशी पत्रकारों को टीएआर के बाहर तिब्बती क्षेत्रों में रिपोर्टिंग करते समय उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। द इकोनॉमिस्ट के पत्रकारों ने जुलाई २०२४ में तिब्बती छात्रों के लिए बोर्डिंग स्कूलों पर रिपोर्ट करने के लिए किंघई के एक तिब्बती क्षेत्र की यात्रा के दौरान लगातार पुलिस निगरानी का वर्णन किया है।

२०२४ और २०२३ के बीच आवागमन के स्तर की तुलना

राजनयिक और अन्य अधिकारी

तिब्बतियों के पास जाने की सुविधा २०२४ में बेहतर नहीं हुई। चीन ने विदेशी राजनयिकों के दौरे की व्यवस्था की और टीएआर में कार्यक्रम खुद आयोजित किए। ऐसी व्यवस्थाएं सरकार द्वारा सख्ती से व्यवस्थित और प्रबंधित की गईं और टीएआर के लोगों के साथ सार्थक बातचीत को रोकने के लिए हरसंभव व्यवस्थाएं की गईं।

पत्रकार

एफसीसीसी की २०२३ की वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि विदेशी पत्रकारों के लिए टीएआर क्षेत्र में जाने पर आधिकारिक रूप से प्रतिबंध है। रिपोर्टरों को विशेष अनुमति के लिए सरकार से आवेदन करना होता या चीन की स्टेट काउंसिल या विदेश मंत्रालय (एमएफए)

द्वारा आयोजित प्रेस टूर में शामिल होना होता है। २०२३ में केवल एक पत्रकार को अनुमति दी गई।

तिब्बती क्षेत्रों में यात्रा को बाधित करने वाले परमिट प्रणाली और अन्य उपाय

ऊपर वर्णित परमिट और अन्य प्रतिबंधों के अलावा, जिन पर्यटकों के तिब्बत यात्रा परमिट के अनुरोध को चीनी सरकार ने पिछले वर्षों में स्वीकार किया है, उन्हें टीएआर जाने में एक बार बाधा का सामना करना पड़ा है। टीएआर में सक्रिय ट्रैवल एजेंटों के अनुसार, तिब्बत यात्रा परमिट से टीएआर के सभी क्षेत्रों की यात्रा नहीं की जा सकती है। कुछ क्षेत्र आम तौर पर आगंतुकों के लिए बंद हैं और वहां जाने के लिए टीएआर पब्लिक सिक्योरिटी ब्यूरो से पूरक अनुमति की आवश्यकता होती है। माउंट एवरेस्ट जैसे कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में जाने की योजना बनाने वाले पर्यटकों को भी सैन्य मामलों के कार्यालय से सैन्य क्षेत्र प्रवेश परमिट और टीएआर एफएओ से विदेशी मामलों के परमिट लेनी होती है। चीनी सरकार ने टीएआर की यात्रा करने की अनुमति देने की अपनी नीति का खुलासा नहीं किया, न ही उसने टीएआर का दौरा करने के लिए अमेरिकी नागरिकों को यात्रा परमिट जारी करने में शामिल अधिकारियों के नाम बताए। ऐतिहासिक रूप से, बीजिंग के अधिकारियों ने टीएआर का दौरा करने के प्रत्येक अमेरिकी के आधिकारिक अनुरोध का मामला-दर-मामला मूल्यांकन किया। टीएआर एफएओ को आम तौर पर किसी भी आधिकारिक यात्रा के लिए एक राजनयिक नोट की आवश्यकता होती है। एक बार जब टीएआर सरकार को अनुरोध प्राप्त होता है तो वह कथित तौर पर विदेशी मामलों की अग्रणी समिति को सूचित करता है। इसमें यूएफडब्ल्यूडी, राज्य सुरक्षा मंत्रालय, सार्वजनिक सुरक्षा मंत्रालय, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी और एमएफए के प्रिफेक्चुरल, प्रांतीय और केंद्रीय स्तर के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यह समिति इन अनुरोधों की समीक्षा करती है। हालांकि अक्सर इस तरह के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया जाता है।

◆ 5.'पिंजरे में बंद पक्षी के समान': चीन इसी तरह तिब्बतियों के स्वतंत्र आवागमन को प्रतिबंधित करता है

०४ जून, २०२५

बीजिंग की भेदभावपूर्ण पासपोर्ट नीति असल में आवागमन प्रतिबंधों के माध्यम से तिब्बती आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को खत्म करने के एक व्यवस्थित प्रयास का हिस्सा है।

- तेनज़िन दल्हा

सदियों से तीर्थयात्राएं तिब्बती बौद्ध संस्कृति की आध्यात्मिक रीढ़ रही हैं। तिब्बत के भीतर और बाहर तीर्थों की ये पवित्र यात्राएं धार्मिक अनुष्ठानों से कहीं अधिक हैं। वे सांस्कृतिक निरंतरता, पारिवारिक संबंधों और सामूहिक पहचान का प्रतीक हैं। हालांकि, आज चीनी सरकार की यात्रा पर प्रतिबंध लगाने की नीतियों ने आस्था की इन मौलिक अभिव्यक्तियों को सरकारी निगरानी और नियंत्रण में बदल दिया है।

तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) में तिब्बती और हान नागरिकों के बीच पासपोर्ट बनवाने में असमानता जातीय भेदभाव के एक परेशान करने वाले ढर्रे को उजागर करती है। यह अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का भी उल्लंघन करती है। जबकि मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के अनुच्छेद- १३ में आवागमन की स्वतंत्रता निहित है, बीजिंग की नीतियां तिब्बती आबादी को इस मूल अधिकार से प्रभावी रूप से वंचित करती हैं।

पासपोर्ट विरोधाभास: तिब्बत में व्यवस्थित यात्रा प्रतिबंध

चीनी अधिकारियों ने दशकों से व्यवस्थित रूप से टीएआर और अन्य तिब्बती आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले तिब्बतियों को पासपोर्ट जारी करने पर प्रतिबंध लगा रखा है। जबकि हान मूल के नागरिक इन क्षेत्रों के भीतर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बिना किसी प्रतिबंध के आवागमन का आनंद लेते हैं। यह पूरी तरह से नस्लीय भेदभाव के आधार पर नागरिक अधिकारों की दो-स्तरीय पदानुक्रमित प्रणाली बनाता है।

पासपोर्ट आवेदन प्रक्रिया में तिब्बतियों की यात्रा को हतोत्साहित करने के लिए जटिल प्रक्रियाएं शामिल की गई हैं। आवेदकों को ऐसे जमानतदार प्रस्तुत करने होते हैं, जो सरकारी पदों पर हों और पासपोर्ट धारक द्वारा विदेश में की जाने वाली प्रत्येक कार्रवाई के लिए खुद को उत्तरदायी मानें। यदि यात्री चीनी अधिकारियों द्वारा राजनीतिक रूप से संवेदनशील समझी जाने वाली किसी भी गतिविधि में शामिल होता है, तो जमानतदार को नौकरी से निकाले जाने, लाभों से वंचित होने और करियर में आगे बढ़ने में बाधा का सामना करना पड़ सकता है। इससे मिलीभगत का एक नेटवर्क तैयार होता है, जहां सरकारी कर्मचारी

स्वाभाविक रूप से जमानत लेने से इनकार कर देते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी आजीविका पर खतरे का डर होता है।

इस प्रणाली का सबसे घातक असर परिवारों को एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़ा करना है। नौकरशाही के चक्रव्यूह में फंसे तिब्बतियों को रिश्तेदारों की ओर से यात्रा की योजना छोड़ने का दबाव झेलना पड़ता है। इन समझौतों का उल्लंघन करने वाले किसी भी व्यक्ति को सामूहिक रूप से कठोर दंड दिए जाने से तिब्बती पासपोर्ट के लिए आवेदन करने से कतराने लगे हैं। इससे स्व-विनियमन सामाजिक नियंत्रण का निर्माण होता है, जहां परिवार खुद ही निगरानी करते हैं। इस तरह बिना किसी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के परिवार के लोग ही सरकार की निगरानी का काम करते हैं।

चीनी अधिकारी व्यवस्थित प्रतिबंधों को लागू करने की बात से इनकार करते हैं और देरी के लिए नियमित 'नौकरशाही प्रक्रियाओं' को जिम्मेदार ठहराते हैं। हालांकि, जो सबूत सामने आ रहे हैं, वे इन दावों का खंडन करते हैं। तरीका बहुत सुसंगत है, बाधाएं बहुत विशिष्ट रूप से लक्षित है और नस्लीय भेदभाव को प्रशासनिक अक्षमता की बात कहकर ढंका नहीं जा सकता है।

प्रतिबंध नौकरशाही की असुविधा से आगे की बात कहते हैं। अधिकारी नियमित रूप से तिब्बती नागरिकों के मौजूदा पासपोर्ट जब्त कर लेते हैं, जिससे वे प्रभावी रूप से चीन की सीमाओं के भीतर फंस जाते हैं। ये उपाय उन क्षेत्रों में सबसे अधिक कठोर हैं, जहां राजनीतिक प्रतिरोध देखा गया है। विशेष रूप से सिचुआन प्रांत के न्गाबा (चीनी: अबा) में। यह क्षेत्र आत्मदाह करने वाले प्रदर्शनकारियों का केंद्र है।

२०२३ की शुरुआत से अधिकारियों ने अत्यधिक प्रतिबंधात्मक शर्तों के तहत तिब्बतियों द्वारा सीमित पासपोर्ट आवेदनों की अनुमति दी है, लेकिन ये अपवाद इस नियम को ही पुष्ट करते हैं। यात्रा की मंजूरी केवल गैर-राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दी जाती है। इसके लिए कई एजेंसियों द्वारा व्यापक जांच की जाती है और वापसी और राजनीतिक अनुपालन के लिखित आश्वासन लिया जाता है।

विभिन्न नस्लीय समूहों के साथ किए जाने वाले सरकारी व्यवहार की तुलना करने पर भेदभाव स्पष्ट हो जाता है। एक ही क्षेत्र के हान मूल के नागरिकों को पासपोर्ट संबंधी बहुत कम जरूरतें पूरी करनी पड़ती है। उन्हें किसी जमानतदार की आवश्यकता नहीं होती, किसी विस्तृत समीक्षा से नहीं गुजरना पड़ता है और किसी सामूहिक दंड का सामना नहीं करना पड़ता है। यह भेदभाव बताता है कि प्रतिबंध भूगोल या सुरक्षा के बारे में नहीं हैं, बल्कि नस्लीय और राजनीतिक नियंत्रण के बारे में हैं।

◆ 6.अमेरिका-चीन महिला फुटबॉल मैच में विरोध के बाद तिब्बतियों को निकाला गया, फिर वापस लिया गया

चीन की टीम ने स्टेडियम से तिब्बती कार्यकर्ताओं को हटाने की अपील की, लेकिन दर्शकों ने तिब्बतियों के पक्ष में नारे लगाने शुरू कर दिए।

आरएफए तिब्बत के लिए टेनज़िन पेमा की रिपोर्ट

मैट पेनिंगटन द्वारा संपादित

03.06. 2025

सप्ताहांत में अमेरिका-चीन महिला फुटबॉल मैत्री मैच के दौरान तिब्बती कार्यकर्ताओं ने 'स्वतंत्र तिब्बत' के लिए आवाज उठाई। इसका अन्य दर्शकों ने भी समर्थन किया और जब तिब्बतियों को सुरक्षा गार्डों द्वारा बाहर निकाला गया तो दर्शकों ने हूटिंग शुरू कर दी।

मिनेसोटा के सेंट पॉल स्थित एलियांज स्टेडियम में शनिवार को हुए मैत्रीपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान चीनी टीम के सदस्यों और सहायक कर्मचारियों को करीब बैठे कम से कम आठ तिब्बती कार्यकर्ताओं के विरोध का सामना करना पड़ा। इस मैच् में अमेरिका ने 3-0 से जीत हासिल की।

सफेद टी-शर्ट पहने कार्यकर्ता खेल की दूसरी पारी के दौरान नारे लगाने लगे और 'फ्री तिब्बत' लिखे सफेद बैनर लहराने लगे।

चीनी टीम के सदस्यों ने उन्हें स्टेडियम से हटाने की मांग की और कार्यकर्ताओं को सुरक्षा गार्डों ने स्टेडियम से बाहर करना शुरू किया। इस पर अन्य दर्शकों ने हूटिंग शुरू कर दी। दर्शक चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगे, 'उन्हें रहने दो!' और उन दर्शकों ने भी 'फ्री स्पीच (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है)!' के नारे लगाए।

इसके तुरंत बाद, स्टेडियम के अधिकारियों ने कार्यकर्ताओं को अपनी सीटों पर लौटने की अनुमति दी, लेकिन उनके सफेद बैनर जब्त कर लिए। कार्यकर्ताओं ने तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज हाथ में लेकर ही बाकी खेल देखा। तिब्बती ध्वज को चीन ने तिब्बत के अंदर प्रतिबंधित कर रखा है। मैच के दौरान तिब्बती कार्यकर्ता अपनी 'फ्री तिब्बत' टी-शर्ट पहने ही रहे।

प्रदर्शनकारियों में से एक तेनज़िन पालसांग ने मंगलवार को रेडियो फ्री एशिया से कहा, 'इस अभियान से सबसे बड़ी सीख यह है कि अगर तिब्बती खड़े होते हैं, अपनी आवाज़ उठाते हैं और अपने मुद्दों के लिए कोई आंदोलन करते हैं तो दुनिया के लोग अपने आप ही समर्थन में उठ खड़े होते हैं।' क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस के मिनेसोटा चैप्टर के अध्यक्ष पालसांग ने कहा, 'चीन सिर्फ फुटबॉल नहीं खेलता। वे मानवाधिकारों के साथ भी खेलते हैं।' उन्होंने तिब्बत के अंदर की कठोर परिस्थितियों का हवाला दिया, जहां उन्होंने कहा कि बच्चे 'औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूल नीतियों के तहत पिस रहे हैं। उन्होंने चीनी सरकार द्वारा संचालित स्कूलों का जिक्र किया जहां 6-17 वर्ष की आयु के तिब्बती बच्चों को कथित तौर पर 'जेल जैसे' परिवेश में रखा गया है और उन्हें मंदारिन भाषा में कठिन पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के लिए मजबूर किया गया है जो पार्टी निष्ठा या सरकार द्वारा अनुमोदित 'देशभक्तिपूर्ण शिक्षा' को बढ़ावा देता है।

फ्रीडम हाउस की वार्षिक 'फ्रीडम इन द वर्ल्ड रिपोर्ट- 2025' में, राजनीतिक और नागरिक स्वतंत्रता के विश्लेषण के आधार पर तिब्बत को शून्य अंक दिया गया है, जिससे यह दुनिया में सबसे कम स्वतंत्र स्थानों में से एक बन गया है। चीन ने 1950 में तिब्बत पर कब्जा कर लिया और तब से तिब्बती संस्कृति और पहचान को मिटाने की कोशिश करते हुए दमनकारी तरीके से इस क्षेत्र पर शासन कर रहा है। बीजिंग इस बात से इनकार करता है कि वह तिब्बत पर दमनचक्र चलाता है या उसकी सांस्कृतिक परंपराओं को मिटाना चाहता है। इसके बजाय वह इस क्षेत्र में आर्थिक विकास को लगभग साठ लाख तिब्बतियों की आबादी पर इसके सकारात्मक प्रभावों के सबूत के रूप में दर्शाता है।

◆ 7.दलाई लामा के 90 वर्ष पूरे होने पर, उनका निर्वासित राष्ट्र सच का सामना कर रहा है

13 जून, 2025

तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु ने 06 जुलाई को अपने जन्मदिन के अवसर पर उत्तराधिकार योजना का खुलासा करने प्रण लिया है। वह चीनी हस्तक्षेप को विफल करने के लिए रचनात्मक कदम उठा सकते हैं।

-मुजीब मशाल और हरि कुमार, द न्यूयॉर्क टाइम्स

दलाई लामा चीनी उत्पीड़न से बचने के लिए लगभग सात दशक पहले तिब्बत से अपने हजारों अनुयायियों के समूह का नेतृत्व करते हुए स्व निर्वासित होकर भारत आ गए। भारत में निर्वासन में रहते हुए उन्होंने तिब्बत को एक राष्ट्र के रूप में बनाए रखने के कठिन काम में खुद को समर्पित कर दिया।

तिब्बती बौद्धों के आध्यात्मिक धर्मगुरु और राजनीतिक प्रमुख के रूप में उन्होंने हिमालय के भारतीय क्षेत्र में एक छोटा सा लोकतंत्र स्थापित किया, जिसमें एक संसद और उसकी सभी नियमित इकाइयां और सुंदरता शामिल हैं। उन्होंने एक सिविल सेवा की स्थापना की और इसके माध्यम से बिखरे हुए लोगों के बीच सेवा की संस्कृति को प्रोत्साहित किया। तिब्बती प्रशासन पूरे भारत के शरणार्थी बस्तियों में स्कूल, क्लीनिक, मठ, कृषि सहकारी समितियां और यहां तक कि वृद्धाश्रम भी चलाता है। लेकिन अगले महीने जब दलाई लामा 90 साल के हो जाएंगे, तो निर्वासित तिब्बती अपने राज्यविहीन राष्ट्र के भाग्य को लेकर चिंतित ही रहेंगे।

जो व्यक्ति तिब्बतियों को एकजुट रखने वाली ताकत और सबसे पहचाना जाने वाले चेहरे के रूप में रहा है, वह लगातार उम्रदराज होता जा रहा है। अपने लोगों को मातृभूमि में वापस ले जाने का उनका सपना अभी भी एक सपना ही बना हुआ है, जबकि चीन तिब्बत की स्वायत्तता की अभिलाषा में चलाए जा रहे आंदोलन को कुचलने के काम को पूरा करने के लिए काम कर रहा है। ऐसे में जब, तिब्बतियों को निरंतर निर्वासन का सामना करना पड़ रहा है, तो संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य वैश्विक शक्तियों से उन्हें मिलने वाले समर्थन को लेकर उनमें और अधिक निराशा का माहौल पैदा हो रहा है।

तिब्बत की निर्वासित संसद के सदस्य शेरिंग यांगचेन ने खुद दलाई लामा के एक कथन का हवाला देते हुए कहा, 'हम अच्छे की उम्मीद कर रहे हैं, लेकिन सबसे बुरे के लिए भी तैयारी कर रहे हैं।'

दलाई लामा ने वादा किया है कि 06 जुलाई को जब उनका जन्मदिन

मनाया जाएगा, तो वे अपने उत्तराधिकारी के बारे में निर्णय लेने की योजना का खुलासा करेंगे, जिसमें इस समय की कठिन परिस्थितियों को भी ध्यान में रखा जाएगा। इसमें सबसे ज़्यादा संकट उनके पुनर्जन्म के चयन की प्रक्रिया को चीन द्वारा हाईजैक करने के प्रयासों से निपटने का है।

तिब्बती परंपरा के अनुसार, दलाई लामा के पुनर्जन्म का चयन की प्रक्रिया वर्तमान दलाई लामा की मृत्यु के बाद ही शुरू होती है। एक नवजात शिशु में अगले दलाई लामा की पहचान होने के बाद उन्हें तैयार होने और बागडोर संभालने तक लगभग दो दशकों का अंतराल हो सकता है।

दलाई लामा ने संकेत दिया है कि वे इन स्थापित प्रथाओं को एक स्पष्ट रणनीति के हिस्से के रूप में बदल सकते हैं, ताकि चीनियों को दूर रखा जा सके और समय के उस शून्यता से बचा जा सके, जिसका फायदा बीजिंग तिब्बती बौद्ध धर्म को नियंत्रित करने के लिए उठा सकता है।

उन्होंने कहा है कि उनके उत्तराधिकारी का जन्म एक स्वतंत्र देश में होगा, जो दर्शाता है कि अगला दलाई लामा निर्वासित तिब्बतियों में से आ सकता है, जिनकी संख्या लगभग 1,40,000 है, जिनमें से आधे भारत में हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि उनका उत्तराधिकारी वयस्क व्यक्ति भी हो सकता है, और जरूरी नहीं कि वह पुरुष ही हो।

चीन के पास दलाई लामा के उत्तराधिकारियों में खुद को शामिल करने के लिए पहले से ही एक खाका तैयार है। तिब्बत के दूसरे सबसे सबसे बड़े आध्यात्मिक धर्मगुरु माने जानेवाले पंचेन लामा में से दसवें की मृत्यु 1989 में हो गई थी। जिस लड़के को दलाई लामा ने उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता दी थी, वह छह साल की उम्र में तिब्बत में लापता हो गए। तब से उन्हें नहीं देखा गया।

उनके स्थान पर चीन ने अपना पंचेन लामा चयन कर थोप दिया। इस महीने की शुरुआत में, उस लामा ने देश के नेता शी जिनपिंग से मुलाकात की और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा जताई।

लेकिन दलाई लामा के उत्तराधिकार में हस्तक्षेप करने से तिब्बत में लगभग साठ लाख लोगों के बीच अशांति भड़कने का खतरा है।

तिब्बती कार्यकर्ता और कवि तेनजिन सुंडुए ने कहा, 'दलाई लामा 65 साल से अपने घर और देश से बाहर हैं और इससे तिब्बत के अंदर रहने वाले तिब्बतियों में पहले से ही दर्द, गुस्सा, हताशा और निराशा की भावना व्याप्त है। आप जानते हैं, यह ज्वालामुखी की तरह फट पड़ेगा।' उत्तराधिकार का सवाल और भी जरूरी हो गया है क्योंकि दलाई लामा बहुत बुजुर्ग हो गए हैं और उनकी सार्वजनिक गतिविधियां लगातार सीमित होती जा रही हैं।

◆ 8.डेगे बांध का विरोध करने वाले तिब्बती बौद्ध मठ के दो महंथों को सजा

येना मठ के दो प्रमुखों को चीन की नियोजित जलविद्युत परियोजना का विरोध करने के लिए तीन और चार साल की जेल की सजा सुनाई गई।

आरएफए तिब्बत

16.06.2025

चीनी अधिकारियों ने तिब्बती मठ के दो वरिष्ठ महंथों को चीनी जलविद्युत बांध परियोजना के खिलाफ 2024 के दुर्लभ सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन में उनकी भूमिका के लिए तीन और चार साल की जेल की सजा सुनाई है। क्षेत्र के दो सूत्रों ने रेडियो फ्री एशिया को यह जानकारी दी है।

सूत्रों ने बताया कि सिचुआन प्रांत के कर्दजे तिब्बत स्वायत्त प्रिफेक्चर स्थित डेगे काउंटी के वांगबुडिंग टाउनशिप में येना मठ के महंथ शेरब को चार साल की जेल की सज़ा सुनाई गई और मुख्य प्रशासक गोन्पो को तीन साल की सज़ा सुनाई गई। सूत्रों ने चीनी अधिकारियों द्वारा प्रतिशोध के डर से नाम न बताने का अनुरोध किया। यह तुरंत स्पष्ट नहीं हो पाया कि सज़ा कब सुनाई गई।

सूत्रों ने कहा कि हिरासत में यातना के कारण गोन्पो की हालत गंभीर है और उसे चेंगदू के वेस्ट चाइना अस्पताल में गहन चिकित्सा इकाई में स्थानांतरित कर दिया गया है।

येना मठ के दो प्रमुखों को सैकड़ों तिब्बती भिक्षुओं और स्थानीय निवासियों के साथ फरवरी 2024 में ड्रिचू नदी (या चीनी में जिनशा) पर 1,100 मेगावाट के गंगटुओ बांध के निर्माण को रोकने के लिए शांतिपूर्ण अपील करने पर हिरासत में लिया गया था। यह बांध येना और वोंटो मठों सहित ऐतिहासिक महत्व के कई मठों को जलमग्न कर देगा और कम से कम दो प्रमुख गांवों में समुदायों को पुनर्वास के लिए मजबूर करेगा। हिरासत में लिए गए कई प्रदर्शनकारियों को कथित तौर पर पूछताछ के दौरान बुरी तरह पीटा गया था। अगले महीने तक अधिकांश को रिहा कर दिया गया, लेकिन प्रमुख महंथों और गांव के नेता- जैसे वोंटो मठ के वरिष्ठ प्रशासक तेनजिन सांग्पो और गांव के अधिकारी तेनजिन - को एक बड़े काउंटी हिरासत केंद्र में स्थानांतरित कर दिया गया। इन पर अधिकारियों को विरोध-प्रदर्शनों में अग्रणी भूमिका निभाने का संदेह था।

सूत्रों ने आरएफए को बताया कि येना मठ को विशेष रूप से गंभीर दमन का सामना करना पड़ा है। अधिकारियों ने भिक्षुओं को उनकी

राजनीतिक विचारधाराओं के कारण उनका 'केंद्रित सुधार और पुन: शिक्षा' के लिए निशाना बनाया और उनकी भूमिका को 'गंभीर मुखबिर' के रूप में चिह्नित किया है।

पहले सूत्र ने आरएफए को बताया, 'सरकार वास्तव में येना मठ के खिलाफ पूरी तरह से मन बना चुकी है, मानो अपना गुस्सा निकाल रही हो।' 2024 में येना मठ के महंथ शेरब का पारंपरिक तिब्बती मुद्रा में दोनों अंगूठे ऊपर उठाए हुए एक वीडियो सामने आया, जिसमें वह अन्य तिब्बती भिक्षु और स्थानीय निवासियों के साथ 20 फरवरी को अधिकारियों के सामने सार्वजनिक रूप से रोए और विनती की कि वे नियोजित परियोजना को आगे न बढ़ाएं।

सामूहिक कारावास

सूत्रों ने आरएफए को बताया कि विरोध- प्रदर्शनों के एक साल से अधिक समय बाद भी ड्रिचू नदी के दोनों ओर का क्षेत्र कड़ी निगरानी में है। वांगबुडिंग टाउनशिप के मठों और गांवों के भिक्षुओं और निवासियों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने सिचुआन और तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में तिब्बती क्षेत्रों के बीच की सीमा पर कई चौकियां स्थापित की हैं, जो सभी प्रवेश द्वार और निकास द्वारों को सख्ती से नियंत्रित कर रही हैं। सूत्रों ने कहा कि केवल पुलिस द्वारा जारी पारगमन परमिट रखने वाले तिब्बतियों को ही नदी के पास स्थित येना और वोंटो जैसे मठों की ओर जाने वाली सड़कों पर स्थापित चौकियों से गुजरने की अनुमति है। उन्होंने कहा कि पारगमन परमिट वाले हान नस्ल के चीनी लोगों को भी प्रवेश करने से रोक दिया गया है। दूसरे सूत्र ने कहा, 'पूरे क्षेत्र को प्रभावी रूप से सील कर दिया गया है, नदी के पास के गांवों और मठों में लगभग 4,000 निवासी और भिक्षु सामूहिक कारावास जैसी स्थिति में निवास करते हैं। उन्होंने आवाजाही की अपनी सभी आजादी खो दी है।' सूत्रों ने कहा कि चीनी अधिकारियों द्वारा राजनीतिक रूप से संवेदनशील माने जाने वाले समय के दौरान, जैसे कि 10 मार्च 1959 के तिब्बती जनक्रांति दिवस की सालगिरह के आसपास या 06 जुलाई को तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु दलाई लामा के जन्मदिन के आसपास निगरानी और भी अधिक बढ़ा दी जाती है। 'संवेदनशील कालावधि' के दौरान स्थानीय घरेलू पंजीकरण के बिना तिब्बतियों को प्रवेश से मना कर दिया जाता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों से डेगे काउंटी सीट की यात्रा करने वाले स्थानीय ग्रामीणों को पारगमन परमिट के लिए आवेदन करना पड़ता है। ड्रिचू नदी पर गंगटूओ नामक एक विशाल 13-स्तरीय जलविद्युत परिसर बांध है जिसे डेगे काउंटी के कामटोक (चीनी में गंगटू) में स्थापित करने की योजना है। यह चीनी सरकार की परियोजना का हिस्सा है, जिसकी कुल नियोजित क्षमता 13,920 मेगावाट है। पिछले साल के विरोध के बाद चीनी अधिकारियों ने संकेत दिया था कि परियोजना आगे बढ़ाने की योजना बनाई गई थी। लेकिन सूत्रों ने कहा कि अभी तक इस बात पर कोई स्पष्टता नहीं है कि निर्माण कब शुरू होगा या होगा भी या नहीं। पहले सूत्र ने कहा, 'भले ही परियोजना आगे न बढ़े, लेकिन आसपास के गांवों के भिक्षुओं और निवासियों को पहले ही बहुत नुकसान हो चुका है।'

9.प्रेस विज्ञप्ति

अमेरिकी सांसदों- मैककॉल और मैकगवर्न ने परम पावन दलाई लामा के 90वें जन्मदिन को 'करुणा दिवस' के रूप में मनाने का द्विदलीय प्रस्ताव पेश किया

17 जून, 2025

वाशिंगटन। आज 17 जून को अमेरिकी कांग्रेस के ऊपरी सदन के सांसद और विदेश मामलों की हाउस कमेटी के चेयरमैन एमेरिटस माइकल मैककॉल (टेक्सास के रिपब्लिकन) ने प्रतिनिधि सभा के सदस्य जिम मैकगवर्न (मैसाचुसेट्स) के साथ मिलकर एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें परम पावन 14वें दलाई लामा के 90वें जन्मदिन के सम्मान में 06 जुलाई, 2025 को 'करुणा दिवस' के रूप में मनाने का सुझाव दिया गया है।

प्रतिनिधि मैककॉल ने कहा, 'सीसीपी के हाथों उत्पीड़न, दमन और अकथनीय हिंसा का सामना करने के बावजूद, परम पावन दलाई लामा ने आंतरिक शांति बनाए रखी है। हालांकि उन्होंने करुणा का उपदेश देना जारी रखा है। उनके उपदेशों ने न केवल अपने लोगों को, बल्कि पूरे विश्व को प्रेरित किया है। पिछले साल धर्मशाला में उनसे मिलकर मुझे बहुत गर्व हुआ था। इस दौरान मैंने तिब्बत के लोगों के लिए अमेरिकी सरकार के समर्थन को बुलंद आवाज़ में उठाया भी। हमने दोनों देशों के लोगों के बीच दोस्ती पर ज़ोर दिया और उनके साहसी, शांतिपूर्ण और बलिदानी नेतृत्व के बारे में और अधिक जाना। परम पावन के 90वें जन्मदिन से पहले 'करुणा दिवस' का आह्वान करते हुए और तिब्बतियों के मौलिक मानवाधिकारों का समर्थन करते हुए यह प्रस्ताव पेश करना मेरे लिए गर्व का विषय है। क्योंकि हम उस दिन का इंतज़ार कर रहे हैं, जब दलाई लामा और उनके लोग शांति से अपने वतन लौट सकेंगे।'

प्रतिनिधि मैकगवर्न ने कहा, 'परम पावन दलाई लामा दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए प्रेरणा हैं, जिनमें मैं भी शामिल हूं। धार्मिक सहिष्णुता, संघर्ष और हिंसक उग्रवाद के प्रति अहिंसक प्रतिक्रिया और शांति-निर्माण पर उनके प्रवचन कालातीत हैं और हमारी वर्तमान परिस्थितियों में इनकी सख्त जरूरत है। वे तिब्बती लोगों की स्वतंत्रता और सम्मान के एक भावुक पक्षधर रहे हैं। कांग्रेस के लिए 14वें दलाई

लामा और उनकी अनगिनत उपलब्धियों को उनके 90वें जन्मदिन पर सम्मानित करना उचित है। हम अपेक्षा करते हैं कि उनकी अगली जयंती ल्हासा में मनाई जाए।' इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत (आईसीटी) के अध्यक्ष तेनचो ग्यात्सो ने कहा, 'यह प्रस्ताव अमेरिका के दोनों दलों के समर्थन वाला एक अद्भुत पेशकश है। यह इस बात की मान्यता है कि परम पावन दलाई लामा करुणा के वैश्विक प्रतीक के रूप में खड़े हैं और अपनी मातृभूमि और तिब्बत के लोगों के लिए शांति और न्याय के प्रयास करने की उनकी आजीवन प्रतिबद्धता का सम्मान करते हैं। एचएफएसी के चेयरमैन एमेरिटस मैककॉल और कांग्रेसी मैकगवर्न के नेतृत्व में इस प्रस्ताव के शीघ्र पारित होने से दलाई लामा के 90वें जन्मदिन का जश्न मनाने वाले सभी लोगों को खुशी और प्रेरणा मिलेगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे तिब्बत में तिब्बती लोगों को आशा और प्रेरणा मिलेगी, जिनके लिए दलाई लामा के जन्मदिन की एक साधारण सार्वजनिक स्वीकृति भी एक खतरनाक कार्य है।' इस प्रस्ताव पर प्रतिनिधि जो विल्सन (साउथ कैरोलिना से रिपब्लिकन), माइक लॉलर (न्यूयॉर्क से रिपब्लिकन), राजा कृष्णमूर्ति (इलनॉयस से डेमोक्रेट), जेमी रस्किन (मैरीलैंड से डेमोक्रेट), जेनिस शाकोवस्की (इलनॉयस से डेमोक्रेट) और यंग किम (कैलीफोर्निया से रिपब्लिकन) ने भी हस्ताक्षर किए हैं।

पृष्ठभूमि:

यह प्रस्ताव आगामी 06 जुलाई, 2025 को परम पावन 14वें दलाई लामा के 90वें जन्मदिन के उपलक्ष में उनकी शांति, अहिंसा, मानवाधिकारों और तिब्बती संस्कृति के संरक्षण के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता को मान्यता देने के लिए 'करुणा दिवस' के रूप में मनाने का समर्थन करता है। यह तिब्बती लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए अमेरिकी कांग्रेस के द्विदलीय समर्थन की पुष्टि करता है, तिब्बती रीति-रिवाजों में चीनी सरकार के हस्तक्षेप का विरोध करता है और दलाई लामा के नैतिक नेतृत्व और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए मानवीय योगदान के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त करता है।

◆ 10.चीन ने तिब्बत के महत्वपूर्ण कागजात ऑनलाइन नीलामी घर को बेचे?

13 जून, 2025

सर बेसिल गोल्ड के निजी संग्रह में उनके द्वारा लिखे गए दस्तावेज शामिल हैं, जो तिब्बत की 'आंतरिक और बाहरी दोनों मामलों में वास्तविक स्वतंत्रता' को साबित करते हैं।

- अनुकृति, स्ट्रैटन्यूज ग्लोबल

एक रहस्यमय ऑनलाइन बोली लगाने वाले ने सर बेसिल गोल्ड के निजी कागजात के लिए लगभग 19,000 डॉलर का भुगतान किया। सर बेसिल गोल्ड पूर्व में भारतीय सिविल सेवा में थे और सिक्किम, भूटान और तिब्बत (1935-45) में 10 साल तक राजनीतिक अधिकारी थे।

टेलीग्राफ की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि इस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता, अगर दलाई लामा के एक पूर्व प्रतिनिधि द्वारा यह आशंका नहीं जताई जाती कि कागजात चीन द्वारा हासिल किए जा सकते हैं। हालांकि सोनम शेरिंग फ्रासी ने इसके लिए बोली लगाई, लेकिन साफ था कि उनकी बोली ऑनलाइन खरीदार की बोली से ऊपर नहीं जाता।

चीनी ये दस्तावेज क्यों चाहते थे? कहा जाता है कि सर बेसिल गोल्ड के निजी संग्रह में उनके द्वारा लिखे गए दस्तावेज शामिल हैं जो 1912 से लेकर 1950 के दशक में चीन के कड़े नियंत्रण तक तिब्बत की 'आंतरिक और बाहरी दोनों मामलों में वास्तविक स्वतंत्रता' साबित करते हैं।

ब्रिटेन ने तिब्बत की स्वायत्तता की पुष्टि करते हुए चीन के आधिपत्य को स्वीकार किया। हालांकि यह रुख अक्सर अन्य कथानकों में खो जाता है।

इस अर्थ में, ये दस्तावेज चीन और तिब्बत दोनों के आख्यानों के लिए महत्वपूर्ण हैं: चीनी चाहेंगे कि ये दस्तावेज कभी सार्वजनिक न हों क्योंकि यह उनके इस दृष्टिकोण का खंडन करता है कि तिब्बत हमेशा चीन का हिस्सा था। बीजिंग तिब्बत की स्वायत्तता या स्वतंत्रता के बारे में किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य को मिटाने पर आमादा है।

तिब्बतियों के लिए, यह इस बात का एक और सबूत है कि 1950 में चीन द्वारा आक्रमण किए जाने और जबरन कब्ज़ा किए जाने से पहले तक उनकी मातृभूमि स्वतंत्र थी।

दस्तावेजों की नीलामी ने एक गहरा सवाल खड़ा कर दिया है: क्या

संप्रभुता से वंचित राष्ट्र को अपने स्वयं के इतिहास तक पहुंच से वंचित किया जा सकता है?

सर बेसिल ने 1912 से 1913 तक तिब्बत के ग्यांत्से में ब्रिटिश व्यापार एजेंट के रूप में काम किया। उन्होंने 1940 में 14वें दलाई लामा के राज्याभिषेक में भाग लिया और एक भारतीय कलाकार कंवल कृष्ण की मदद से पूरे कार्यक्रम को जलरंगों की शृंखला में शामिल किया। इन जलरंग चित्रों की नीलामी भी 6,17,000 डॉलर से अधिक में हुई।

सोनम फ्रैसी को अपने देश के अतीत के साक्ष्य हासिल करने के लिए सार्वजनिक नीलामी में प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी, जो तिब्बत की त्रासदी को रेखांकित करता है। कथित तौर पर, तिब्बत में कई तिब्बती जिन्होंने वीपीएन के माध्यम से ऑनलाइन नीलामी तक पहुंचने की कोशिश की, वे निराश हो गए। क्योंकि चीनी अधिकारियों ने साइट तक पहुंच को ही अवरुद्ध कर दिया।

◆ 11.तिब्बती राजनीतिक कैदी को जानिए

नाम : तेनजिन न्यिमा

उपनाम: टेमी

आयु: 19 वर्ष

लिंग: पुरुष

व्यवसाय: भिक्षु

संबद्धता: द्ज़ा वोनपो गाडेन शेड्रुप मठ

जन्म: द्ज़ा वोनपो गांव, वोनपो टाउनशिप, सेरशुल (चीन: शिकू) काउंटी, करज़े (चीन: गंजी), खाम (चीन के सिचुआन प्रांत में शामिल)

मृत्यु तिथि: 19 जनवरी 2021

तेनजिन न्यिमा अपनी मौत के समय मात्र 19 वर्ष के थे, लेकिन उनका जीवन सबसे हृदय विदारक और क्रूरतम दरिंदगी की भेंट चढ़ा। पूर्वी तिब्बत में द्ज़ा वोनपो मठ के भिक्षु तेनजिन को पहली बार नवंबर 2019 में केवल पर्चे बांटने और तिब्बती स्वतंत्रता का आह्वान करने के लिए गिरफ्तार किया गया था। यह कार्य कई युवा तिब्बतियों ने अपनी संस्कृति और लोगों के प्रति गहरे प्रेम के कारण किया है। मई 2020 में कुछ समय के लिए रिहा होने के बाद, कुछ ही महीनों बाद उन्हें अपने साथी बंदियों के बारे में खबर सार्वजनिक करने के आरोप में फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद महीनों तक उनके साथ अमानुषिक अत्याचार हुआ। आखिरकार जब उनके परिवार को उन्हें जेल से लेने के लिए बुलाया गया, तो उन्होंने एक ऐसे लड़के को पाया जिसे वे मुश्किल से पहचान पाए- बोलने में असमर्थ, हिलने-डुलने में असमर्थ, उसका शरीर टूटा हुआ और उसकी आत्मा कुचली हुई थी। वह गंभीर रूप से बीमार थे, जो आंतरिक चोटों, कुपोषण और फेफड़ों में गंभीर संक्रमण से पीड़ित थे। संभवतः हिरासत में बार-बार पिटाई और उपेक्षा के कारण उनकी यह दशा हुई थी। उसे चेंग्दू और बाद में डार्टसेडो के अस्पतालों में ले जाया गया, लेकिन दोनों ने उसे यह कहते हुए वापस कर दिया कि और कुछ नहीं किया जा सकता। उनके परिवार के लोगों ने प्यार और हताशा में उन्हें घर पर ले गए, जहां कुछ ही समय बाद कोमाटोज, लकवा और दर्द के कारण उनकी मृत्यु हो गई। तेनजिन की मौत सिर्फ एक त्रासदी नहीं है; यह एक भयावह उदाहरण है कि कैसे चीनी अधिकारी तिब्बतियों को दंडित करने और चुप कराने के लिए यातना देते हैं और उपचारों में उपेक्षा करते हैं। वह एक शांत, बहादुर युवक थे, जिनका एकमात्र 'अपराध' स्वतंत्र तिब्बत की आशा व्यक्त करना था। उनकी कहानी एक दर्दनाक याद दिलाती है कि हर सुर्खियों के पीछे एक इंसान की जान छिपी होती है - एक बेटा, एक दोस्त, एक भिक्षु- जो अन्याय और क्रूरता के कारण चला गया। दुनिया को तेनजिन न्यिमा को सिर्फ एक आंकड़े के तौर पर नहीं, बल्कि उन दुखों के प्रतीक के तौर पर याद रखना चाहिए जिन्हें बहुत से तिब्बती चुपचाप सहते हैं।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to revise the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यालय पता: भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच-10, द्वितीय मंजिल, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024
फोन: 011-[illegible]
ई-मेल: [illegible]

तिब्बत पर विश्व सांसदों का नौवां सम्मेलन

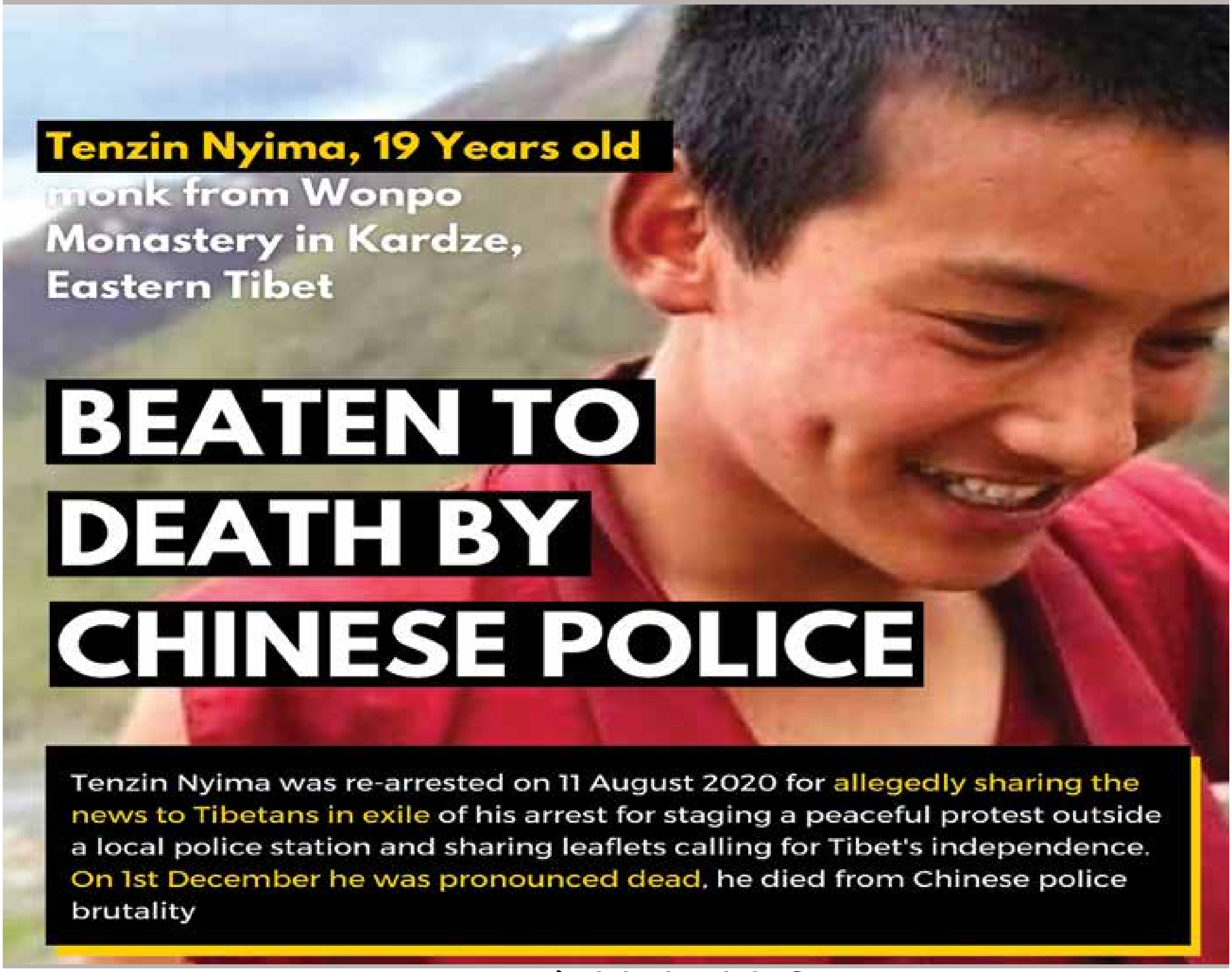

तिब्बती राजनीतिक कैदियों की रूपरेखा - तेनज़िन न्यिमा